Workshop on Teachers Education

अप्रेल 2009 से जुलाई 2009

एक दृष्टि में

सौजन्य	यूनीसेफ ,जयपुर
सहभागी संस्था	वाणी संस्था ,जयपुर
दो दिवसीय कार्यशाला	1 अप्रेल 09 से 2 अप्रेल 09, जयपुर पैलेस
	संभागी–34, यूनीसेफ, एस.एस.ए. शिक्षाविद् वाणी संस्था
एक दिवसीय कार्यशाला	9 अप्रेल 09 सर्वशिक्षा अभियान सभागार संभागी 24 उपर्युक्त
उद्देश्य	ग्रीष्मकालीन शिक्षक प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षक –प्रशिक्षण हेतु मॉड्यूल निर्माण
	संदर्भ सामग्री कार्ययोजना

शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल

लेखन/संशोधन/परिवर्द्धन	05 अप्रेल से 08 अप्रेल, 2009
प्रशिक्षक– प्रशिक्षण मॉड्यूल लेखन	10 अप्रेल से 16 अप्रेल, 2009
कम्प्यूटर प्रिंटिंग एवं प्रस्तुतीकरण	18 अप्रेल से 20 अप्रेल, 2009
मुख्य दक्षप्रशिक्षण पूर्व तैयारी	16 मई से 17 मई, 2009
प्रशिक्षण	18 मई से 20 मई, 2009
संदर्भ्य व्यक्ति प्रशिक्षण	21 मई से 26 मई, 2009
शिक्षक प्रशिक्षण	28 मई से 30 जून, 2009
मॉड्यूल संदर्भ सामग्री एवं प्रशिक्षणों की समीक्षा ,अनुशीलन एवं नवीन कार्ययोजना निर्माण	जुलाई, 2009
निर्देशक	श्री ललितकिशोर लोहिमी शिक्षाविद्
	श्री जितेन्द्र शार्मा यूनीसेफ, जयपुर
समन्वयन	डॉ. संतकुमार शार्मा , वाणी संस्था
वि.वि. सलाहकार	श्री एच. एन. गुप्ता सेवानिवृत रीडर
	सुश्री नीतू शार्मा, संधान
	श्री अनिल गुप्ता
	(सूची संलग्न है)

शिक्षक शिक्षा में संस्था का संबलन

सीखना एक सत्त प्रक्रिया है। इसमें निरन्तरता बनाये रखने के लिए शिक्षक स्वयं की प्रभावी इच्छा आवश्यक है जिसकी मदद के लिए सरकार एवं अन्य एजेन्सीज विभिन्न भूमिकाओं के साथ जुड़ी हुई है। इस संदर्भ में यूनीसेफ की एक महती भूमिका है । राज्य के सर्वशिक्षा अभियान केसाथ मिलकर यूनीसेफ ने शिक्षकों के प्राप्त फीड बैक (अनुश्रवण)के अनुसार ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षणों की कार्ययोजना तैयार की गई। इस कार्ययोजना की क्रियान्विति यूनीसेफ के द्वारा वाणी संस्था को सौपी गई ।

कार्ययोजना क्रियान्विति के प्रमुख दायित्व निम्नांकित थे : –

- शिक्षक प्रशिक्षण एवं दक्ष प्रशिक्षण हेतु मॉड्यूल तैयार करना।
- मुख्य दक्षप्रशिक्षकों हेतु संदर्भ सामग्री बनाना।
- प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण में संबलन।
- मुख्य दक्ष प्रशिक्षक शिक्षक प्रशिक्षणों में शिक्षा संबलन।

उपर्युक्त अधिगम सूत्रों के क्रियान्वयन चरण निम्नांकित रहे–

- संस्था के विशेषज्ञों/ सलाहकारों के साथ बैठकर कार्ययोजना तैयार करना।
- यूनीसेफ, सर्वशिक्षा अभियान एवं शिक्षा विशेषज्ञों के साथ दो दिवसीय कार्ययोजना का आयोजन।
- शिक्षक प्रशिक्षणो हेतु विषयानुसार मॉड्यूल लेखन ।
- प्रशिक्षक – प्रशिक्षणों हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन।
- प्रशिक्षक– प्रशिक्षण मॉड्यूल लेखन।
- प्रशिक्षणों (शिक्षण एवं प्रशिक्षक) में संस्था के विषय विशेषज्ञों द्वारा संबलन।

इस संदर्भ में चरणवार समीक्षात्मक टिप्पणी निम्नांकित रुप से अवलोकनीय है –

1. **क्रियान्वयन कार्ययोजना बैठक :–** यूनीसेफ एवं वाणी संस्था के बीच शिक्षक शिक्षा में संबलन की दिशा पर दिनांक 25/03/09 को सहमति एवं स्वीकृति सूचक अनुबन्ध हुआ। दायित्व की महता को सहज भाव से चुनौती रुप में स्वीकारते हुए संस्था के विषयविशेषज्ञ एवं कार्यकर्ताओ की बैठक दिनांक 28/03/09 को हुई जिसमें निम्नांकित निर्णय लिये गए –

1.1 यूनीसेफ, सर्वशिक्षाअभियान एवं शिक्षाविदों के साथ शिक्षक प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रशिक्षक प्रशिक्षणो हेतु मॉड्यूल लेखन के आधर भूमि तैयार करने एवं फीडबैक के आधार पर कार्य योजना निर्माण हेतु कार्यशालाओं का आयोजन में सहभागी बनेगी ।

1.2 संस्था के विषय विशेषज्ञ एवं सलाहकार मिलकर इस कार्य को गति देंगे। इस हेतु विषयवार टीम का गठन भी किया गया –

हिन्दी –	श्री ललित किशोर लोहिनी
	सुश्री नीतू शार्मा
	श्री दीनदयाल शार्मा
गणित –	श्री अनिल कुमार गुप्ता
	श्री नवल सोनी
	श्री कमलेश गुप्ता
सामान्य –	श्री सुभाष मंगल
	श्री नटवर आमेरा
	श्री जगतराम शार्मा
अन्य –	श्री कमल किशोर
मार्गदर्शन –	श्री जितेन्द्र जी यूनीसेफ
समन्वयन –	डॉ. संतकुमार शार्मा वाणी संस्था

1.3 उपर्युक्त टीम शिक्षक –प्रशिक्षण, प्रशिक्षक– प्रशिक्षण मॉड्यूल लेखन एवं प्रशिक्षण संबलन तीनो के लिए काम करेगी । उपर्युक्त दायित्व आवश्यकतानुसार परिवर्तित भी किये जा सकते है किंतु इसकी जरुरत नहीं पड़ी।

2. <u>कार्ययोजना निर्माण हेतु कार्यशालाओं का आयोजन</u> :– शिक्षक–प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षक–प्रशिक्षण (ग्रीष्मकालीन) हेतु पृथक–पृथक निम्नांकित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं के आयोजन का उद्देश्य निम्नांकित था–

2.1 <u>दो दिवसीय कार्यशाला</u> :– इस कार्यशाला का आयोजन दिनांक 01/04/09 से 02/04/09 तक "जयपुर पैलेस" में किया गया । सूनीसेफ सर्वशिक्षाअभियान के अधिकारी, शिक्षाविद् एवं वाणी संस्था के विषय विशेषज्ञो सहित कुल 34 संभागी उपस्थित रहे । सूची परिशिष्ट पर संलग्न है। कार्यशाला में उपर्युक्त बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा हुई । चर्चा में यह महसूस किया गया कि –

- वर्तमान में प्रचलित विषयानुसार शिक्षक – प्रशिक्षण मॉड्यूल में संशेधन, परिवर्तन, लेखन की पर्याप्त जरुरत है इसकी जिम्मेदारी निम्नांकित रुप से तय की गई –

सामाजिक विज्ञान, विज्ञान – एस.आई.ई आर टी., उदयपुर

हिन्दी (प्रा. स्तर) – वाणी संस्था, जयपुर (यूनीसेफ के माध्यम से)

गणित प्रा. एवं. उ.प्रा.स्तर – वाणी संस्था, जयपुर (यूनीसेफ के माध्यम से)

- प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल हेतु प्रचलित सामान्य मॉड्यूल काफी बडा है ।इसके पर्याप्त अनुशीलन की आवश्यकता है। यथा –
  - प्रारम्भिक 80 पृष्ठ इसमें से हटाकर प्रशिक्षक–प्रशिक्षण संबंधित सामग्री में जोडे जाएँ।
  - तीन अध्याय हटाये जाएँ जो यहाँ असंबद्व है।
  - अधिकाशं विषयवस्तु विधा से संबंबधत है, अतः इसमें कुछ सामग्री पृथक से प्रशिक्षक–प्रशिक्षण सामग्री से जोडी जाए तथा कुछ सामग्री शिक्षक संदर्भ सामग्री के रुप में शिक्षकों के हाथ में पहुँचे।
- प्रशिक्षक– प्रशिक्षण से संबंधित सामग्री की अभी भी कमी महसूस की जा रही है जो प्रशिक्षक को समर्थ बना सके । अतः सामान्य मॉड्यूल में से कुछ सामग्री ली जाकर अन्य मजबूती देने वाली सामग्री जोडकर मॉड्ल तैयार किया जावे।
- कार्यशाला के अन्त में यह अपेक्षा की गई कि यूनीसेफ तथा सर्वशिक्षा अभियान इस कार्य को यथासमय पूर्ण करायेंगी । इस कार्यशाला का संपूर्ण वित्तीय भार यूनीसेफ द्वारा वाणी संस्था के माध्यम से कराया गया।

2.2 <u>एक दिवसीय कार्यशाला</u> :– दो दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल लेखन की आवश्यकता तो बताई गई किन्तु दिशाबिन्दुओं पर खुलकर चर्चा नहीं हुई। अतः प्रशिक्षक प्रशिक्षण हेतु यूनीसेफ एवं सर्वशिक्षा अभियान के संयुक्त तत्वाधान में 09/04/09 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन सर्वशिक्षा अभियान के सभाकक्ष में किया गया। इस कार्यशाला का सबसे महत्वपूर्ण चर्चित बिन्दु सामान्य मॉड्यूल रहा। कुछ विशेषज्ञो की राय थी कि वर्तमान में प्रचलित सामान्य मॉड्यूल है तो अन्य मॉड्यूल की जरुरत क्यों है? यूनीसेफ के श्री जितेन्द्रजी ने से स्पष्ट करते हुए बताया कि गत वर्षो के प्रशिक्षण फीडबैक से यह बात सामने आई कि इस पर कार्य नहीं हो पाया । समें मुछ सामग्री ऐसी है जो प्रशिक्षक – प्रशिक्षण मॉड्यूल के साथ जुडनी चाहिए तथा मुछ सामग्री संदर्भ सहायक–सामेग्री के रुप में शिक्षको–प्रशिक्षको के पास पहुँचनी चाहिए। अतः इसे रूप में दखना चाएि कि इस सामग्री का व्यवस्थित उपयोग हो तथा अनावश्यक विस्तार कम किया जाए जैसा दो दिवसीय कार्यशाला में निश्चित हो चुका है। चर्चा के बाद निष्कर्ष निम्नांकित रहा–

- सामान्य मॉड्यूल के प्रारम्भिक 80 पृष्ठो की सामग्री प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल में शामिल की जा सकती है।
- प्रशिक्षक तकनीक को लेकर पृथक से प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल की आवश्यकता है, जो अभी तक उपलब्ध नहीं है ।
- सामान्य मॉड्यूल की संदर्भ सहायक सामग्री भी प्रशिक्षकों की मदद के लिए पहुँचनी चाहिए।

3. **<u>शिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल लेखन कार्यशाला</u>** :–शीर्षगत मॉड्यूल निर्माण हेतु दोनो कार्यशालाओं के निर्णयात्मक बिन्दुओं के आधार पर कार्य शुरु किया गया। जिन विषयों पर 5 अप्रेल 09 से 8 अप्रेल, 09 तक कार्य हुआ वे विषय निम्नलिखित थे –

(1)	हिन्दी प्राथमिक स्तर	–	श्री ललित किशोर लोहिमी
			सुश्री नीतू शार्मा
			श्री दीनदयाल शर्मा
(2)	गणित प्राथमिक स्तर	–	श्री अनिल गुप्ता
			श्री नवल सोनी
(3)	उच्च प्राथमिक स्तर	–	श्री कमलेश गुप्ता

3ण्1 **<u>मॉड्यूल लेखन की विधि निम्न प्रकार रही</u>** –समस्त ग्रुप में बैठकर मॉड्यूल लेखन के संरचनागत ढाँचे पर एकरूपता की दृष्टि से चर्चा की गई एवं निम्नांकित विधि तय की गई –

- प्रत्येक विषय ग्रुप मॉड्यूल (प्रचलित)का अध्ययन कर उसमें गैपस् को ढूँढेंगें तथा अनावश्यक सामग्री हटाना भी निश्चित करेंगे।
- यदि कोई महत्वपूर्ण विषय वर्तमान के मॉड्यूल में छूट गया है तो उसे भी तय कर कार्य आवंटन में जोडेंगे।
- आवंटित विषयों पर पहले बैठकर लेखन बिन्दु तय किये जाते तथा दूसरे दिन प्रथम दो घंटो में बैठकर लिखा जाता।
- लेखन के पश्चात् विषय ग्रुपस में चर्चा की जाती, आवश्यक अंश जोडे जाते एवं अनावश्यक हटाये जाते।
- इसी दिन लेखन पश्चात् श्री ललितकिशोर लोहिमी एवं समन्वयक के साथ बैठकर लिखे गए/हटाये गए/जोडे गए विषयो पर पुनः चर्चा कर संशोधन होता । इसी समय समस्त विषयग्रुप्स के विषय–विशेषज्ञ भी साथ बैठते तथा उनकी राय को भी इसमें सम्मिलित किया जाता ।
- लेखन के समय प्रतिदिन श्री जितेन्द्र जी शार्मा यूनीसेफ की उपस्थिति भी विशेषज्ञो के लिए लाभप्रद रही क्योकि वे मॉड्यूल की मूल भवना से जूडे हुए थे अतः उनके अनुभव भी इन मॉड्यूल में समाहित हो सके ।

3.2 प्राथमिक स्तर के विषय मॉड्यूल्स लेखन का कार्य तो 8 अप्रेल 09 तक पूर्ण हो गया किंतु उ.प्रा. गणित में विषय अध्याय अधिक होने से टीम को 2 से 3 दिन तक का समय और दिया गया जो प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल के समानान्तर चलता रहा ।

3.3 यह कार्यशाला आवासीय तो नहीं थी किंतु वर्किंग लंच की व्यवस्था के कारण प्रातः 9 बजे सांय 7 बजे तक कार्य निरन्तर चलता रहता था । एक जगह बैठने का लाभ यह भी रहा कि परस्पर विचार–विमर्श समय –समय पर हो सका।

3.4 इस विधि से सभी मॉड्यूल्स में अधोलिखित कार्य हुआ–

- हिन्दी प्राथमिक स्तर मॉड्यूल में कुल 10 अध्याय रखे गए। इनमें दो अध्याय नये जोडे गए तथा शेष में कुछ अंश हटाये गये और जोडे गये।
- गणित प्रा. स्तर में 6 अध्याय मॉडयूल में रखे गये तथा उच्च प्रा. स्तर में 29 अध्याय रखे गए। गणित में अधिकांश कार्य का पुनर्लेखन ही करना पडा । साथ ही नई विधाऐं भी जोडी गई।

3.5 इस कार्यशाला की सारी व्यवस्था वाणी सस्था परिसर में की गई । कम्प्यूटर प्रिंटिंग भी साथ–साथ चलता रहा । दिनांक 8 अप्रेल 09 को कार्य समाप्त कर सायं मॉड्यूल कम्प्यूटर प्रिंटिंग हेतु संस्था का सौंप दिये गये।

4. <u>प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल लेखन कार्यशाला</u> :– इस कार्यशाला का आयोजन 10 अप्रेल 09 से 16 अप्रेल 09 तक किया गया। सर्वशिक्षा अभियान के सभागार में 9 अप्रेल 09 को आयोजित बैठक में मॉड्यल लेखन की आवश्यकता एवं सामान्य मॉड्यूल के विषय इस मॉड्यूल के साथ आवश्यकतानुसार जोडने की बात तो तय हो गई थी किंतु मॉड्यूल लेखन के विषय एवं लेखन एवं तकनीक पर चर्चा नहीं हो सकी थी। अतः प्रथम दिन श्री ललितकिशोर लोहिमी एवं श्री जितेन्द्र शार्मा के निर्देशन में सभी विषय विशेषज्ञों विस्तृत चर्चा भी एवं लेखन–योजना तैयार की।

4.1 मॉड्यूल लेखन में 8 विषय ऐसे चुने गए जो प्रशिक्षणतकनीक के रूप में प्रशिक्षक के लिए मददगार सिद्व हो सकेंगे। इन विषयों में विषयवस्तु भाग एवं तकनीक भाग तय किया गया। किस विषय को लेकर किस तकनीक से समझाना लाभप्रद होगा, यह भी तय कर लिया गया। यह भी निश्चित कर लिया गया कि सामान्य मॉड्यूल का कौनसा भाग इस मॉड्यूल के साथ जोडा जाना है तथा उसमें क्या जोडना–हटाना है।

4.2 इसी दिन लेखन की विधि एवं तरीकों पर खुलकर चर्चा हुई तथा निम्नांकित रुप से तय किया गया–

- दो व्यक्ति (विषय विशेषज्ञ) एक ही विषय पर अलग–अलग लिखेंगे। लिखने की दिशा पहले तय की गई, तदनुसार लेखन कार्य अलग–अलग किया गया।
- लिखने से पहले विषयवस्तु एवं तकनीक पर दोनो, बैठकर संक्षिप्त चर्चा करते लिससे संबंधित विषय हेतु धारणा स्पष्ट हो सके।
- लिखने के पश्चात् दोनो विषय विशेषज्ञो ने परस्पर लिखे हुए को सुना–सुनाया। एक दूसरे की अच्छी बातो को सम्मिलित किया गया तथा दोनो ने बैठकर एक अच्छा प्रारूप तैयार किया ।

- प्रतिदिन सायं समीक्षा बैठक होती जिसमें किये गये कार्य को समुह के सामने प्रस्तुत किया जाता। इसमें सभी विषय विशेषज्ञ बैठते। सुनते समय अपनी राय जोडनी हो तो नोट कर ली जाती तथा सुनाने के पश्चात् उस राय को बताया जाता कि इसमें इस तरीके को सम्मिलित कर लिया जाए तो उत्तम रहेगा। सभी उस तरीके पर भी विचार करते तथा आम राय बनती तो उसे जोड लिया जाता।
- इस प्रकार से निखरे स्वरूप का पुनर्लेखन किया जाकर ही अंतिम रूप से प्रस्तुत किया जाता।
- इस अंतिम प्रस्तुत स्वरूप को भी श्री ललित किशोर लोहिमी किशोर लोहिमी, श्री जितेन्द्र जी एवं समन्वयक एक बार पुनः देख लेते तथा अधुरे गेप्स की पूर्ति यहाँ भी कर ली जाती।
- इस प्रकार प्रारंभ से एक विषय पर चार बार चर्चा एवं लेखन होता तथा अंतिम स्वरूप भी एक बार पुनः देखा जाता। ऐसे निखरे स्वरूप को स्वीकार किया गया ।
- दिनांक 16 मई 2009 का अंतिम प्रारूप कम्प्यूटर प्रिंटिंग हेतु वाणी संस्था को सौंप दिया गया। गणित के लिए 2 दिन और दिये गए।

5. **<u>मॉड्यूल लेखन परिणाम एवं प्रभाव</u>:–**वाणी संस्था द्वारा यूनीसेफ की अपेक्षानुरूप कार्य (मॉड्यूल लेखन) सम्पन्न कर सर्वशिक्षा अभियान को अंतिम प्रकाशन हेतु कम्प्यूटर की सोफ्ट व हार्ड कॉपी दिनांक 18.04.09 को सौंप दी। इसी प्रकार से एक–एक कॉपी यूनीसेफ को सौंप दी गई। यह प्रथम चरण था यूनीसेफ ने कार्य को सराहकर इस उत्साह को बढाया। दूसरा चरण मॉड्यूल प्रकाशन के बाद क्षेत्र में उसके प्रभाव जानने का था। यह चरण अधिक उत्साहजनक नहीं रहा। कार्य और परिणाम मे यहाँ अन्तर ऊपर से ही देखने को मिला।

संपूर्ण प्रभाव को निम्नांकित रूप से देखा जा सकता है –

- मॉड्यूल प्रकाशन सर्वशिक्षा अभियान द्वारा कराया गया था। प्रकाशन के दौरान सूचना मिली कि प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मॉड्यूल अभी विचाराधीन है।
- चर्चा में यह भी सामने आया कि इस मॉड्यूल की विशेष जरुरत नहीं है। यही कारण है कि कुल प्रस्तावित 6 दिन की ट्रेनिंग में इसे 3 दिन दिया जाना भी धूमिल हो गया ।
- मॉड्यूल के साथ दिया पूरा प्रोग्राम लगभग अनछूआ रहा ।
- प्रशिक्षक प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु प्रशिक्षण तकनीक के महत्व को दो दिवसीय एवं एक दिवसीय कार्यशाला में ना केवल उभारा गया था अपितु प्रशिक्षक मॉड्यूल की अनुपलब्धता बताकर इसकी आवश्यकता भी स्थापित की गई थी। शिक्षाविद् विषय–विशेषज्ञ यूनीसेफ एवं सर्वशिक्षा अभियान से जुडे सभी शिक्षाविदो की राय इस रूप में अप्रभावी रही तथा बैठक के दो दिवसीय अस्तित्व को भी चुनौती दी गई। जिस स्तर पर भी यह हुआ, वह शिक्षा के प्रति रुझान पर प्रश्नवाचक है।

5.1 <u>मुख्य प्रशिक्षक प्रशिक्षण</u>– सर्व शिक्षा अभियान विभाग द्वारा प्रशिक्षण को 3 दिवस कर दिया तथा 18 मई 2009 तक आयोजन का जिम्मा विद्याभवन उदयपुर को सौंपा गया। मॉड्यूल की प्रभाविता जानने एवं अपना संबलन सहसोग देने हेतु हमारे मॉड्यूल लेखन विषय–विशेषज्ञो का कार्यक्रम पूर्व से तय था किंतु जब ज्ञात हुआ कि टी. ओ. टी. मॉड्यूल का प्रकाशन ही नहीं हुआ तो संस्था के विषय–विशेषज्ञो की भूमिका हेतु दिनांक 16.05.09 को एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें यूनीसेफ से श्री जितेन्द्र एवं सर्वशिक्षा अभियान से डॉ. बृजमोहन (जिन्हें तीन दिवसीय प्रशिक्षण में समन्वयन का काम सौंपा गया था) भी उपस्थित रहे।

बैठक में निम्न बिंदु विभिन्न विषय– विशेषज्ञो ने रखे –

- जब मॉड्यूल का प्रकाशन ही नहीं हुआ है, वह प्रभाव में ही नहीं तो संबलन किस बात का ?
- तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्माण में कही भी संस्था को शामिल नहीं किया गया तो हम एकदम जाकर कैसे खडे हो सकते है?
- डॉ. बृजमोहन जी ने बताया कि कार्यक्रम बन चुका है और उसमें फेरबदल की गुंजाइश भी कम है।

ऐसी स्थिति मे श्री जितेन्द्र जी यूनीसेफ ने सर्व शिक्षा अभियान के उपनिदेशक श्री गिरिराज गुप्ता से चर्चा की। श्री गुप्ता ने बताया कि ऐसी कोई बात नही है आप विषय–विशेषज्ञ भेजे। उसके बाद यूनीसेफ की शिक्षा अधिकारी श्रीमती सुलगना जी से चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि चूंकि हम विषय मॉड्यूल से भी जुडे है अतः हमें जाना चाहिए और जहाँ आवश्यकता एवं अवसर हो प्रशिक्षक तकनीक को भी बताएं। इस निर्देश पर संस्था के विषय–विशेषज्ञ वहाँ 17.05.09 को डॉ. बृजमोहन के साथ विद्याभवन पहुँचे और वहाँ के विषय–विशेषज्ञो से चर्चा की। कार्यक्रम बन चुका था अतः उसमें ज्यादा फेरबदल की गुंजाइश नही थी फिर भी कुछ जुडवाये गये।

5.1.1 मुख्य प्रशिक्षक प्रशिक्षण से हमारे साथी तीन दिन तक जुडे उनके अनुभव बिंदुवार उल्लेखनीय है –

- मुख्य प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत में न तो प्रार्थना सत्र गीत रखे गये तथा ना ही वातावरण निर्माण का कार्य शुरु हुआ।
- विद्याभवन के मुख्य दक्ष प्रशिक्षक इस धारा से न तो कभी प्रशिक्षित रहे तथा न ही मॉड्यूल लेखन में उनका सहयोग रहा। वे परम्परागत प्रशिक्षण से जुडे हुए थे अतः मॉड्यूल की विधा पर वे ठीक से कार्य नहीं कर सके। अपने तरीके ही जोडे गये जो संभागियों को संतुष्ट नहीं कर सके।
- सभी संभागी प्रधानाचार्य एवं प्राध्यापक स्तर के थे। वे अपने सामने खडे मुख्य दक्ष प्रशिक्षकों को हल्का महसूस कर रहे थे।

- विषय की प्रगाढता एवं परिस्थितिगत विवशता को देखते हुए हमारे विषय विशेषज्ञो ने कमान संभाली तथा बहुत सा उनका कार्य भी इनको करना पडा।
- प्रत्येक विषय के दो ग्रुप बनाये गये थे एक–एक ग्रुप मे हमारे विषय विशेषज्ञो के अतिरिक्त तीन–तीन व्यक्ति दक्ष प्रशिक्षक के रुप में खडे थें, जिसका औचित्य समझ में नहीं आ रहा था। इसके बाद भी स्थिति नहीं संभलने पर हमारे विषय–विशेषज्ञ जुडे।
- हमारे विषय–विशेषज्ञो को भी मॉड्यूल लेखन के अनुसार नहीं जोडा गया। यह तो शुभ संयोग था कि हमारे साथी सभी विषयो में अनुभव रखते थे।
- दिनांक 19.05.09 को यूनीसेफ से श्री जितेन्द्र जी भी जुडे। छहों समूह को एक साथ बिठाकर चर्चा की गई।

चर्चा में उभरकर आये मुख्य बिंदु निम्न थे : –

- तीन दिन का समय कम है।
- मॉड्यूल में विषयवस्तु के अतिरिक्त प्रशिक्षण तकनीक कही भी नहीं है जिसकी हमें जरूरत है।
- हम प्रशिक्षण कैसे करवाये इसमें हमें निपुण बनाने की जरूरत है जो नहीं मिल रहा है।
- मॉड्यूल्स की तकनीक को भी बदला जाए।
- दिनांक 20.05.09 को सर्वशिक्षाअभियान से उपनिदेशक श्री गिरिराज गुप्ता भी आये। वे लंच बाद जुडे। चूंकि अंतिम दिन था तथा कुछ संभागियो को जाते ही 21–22 मई से अग्रिम प्रशिक्षण करवाना था, अतः उनकी दो – तीन ग्रुपस से ही चर्चा हो सकी ।
- पूरे प्रशिक्षण में प्रशिक्षक– प्रशिक्षण के केवल तीन विषय रखे गये थे उन्हे भी पूरा सा समय नही मिल सका ।
- जो मुख्य दक्ष प्रशिक्षक लगाये गये है, वे हल्के है।
- SIERT के संभागी बहुत कम जुड पाये ।
- प्रशिक्षण का समय भी कम है तथा अग्रिम प्रशिक्षण हेतु गैप नहीं है ।
- प्रशिक्षक सहायक सामग्री समय पर उपलब्ध नहीं होती ।
- प्रशिक्षण तकनीक की कमी है, विषय ज्ञान तो हमें है।
- समग्र रुप से प्रशिक्षण में सीखने की गुंजाश कम रही । ऐसा भी लगा कि संभागी पूर्व प्रशिक्षणो से जुडे हुए थे अतः उन्हें कोई नई बात सीखने को कम मिली । हमारे विषय – विशेषज्ञो ने प्रशिक्षण तकनीक पर अवधारण खोजकर चर्चा की , लहर कार्यक्रम भी बताया जो उनको अच्छा लगा।

5.1.2 सुझाव –

- मुख्य दक्ष–प्रशिक्षक प्रशिक्षण के आयोजन की पूर्व तैयारी। बैठक में मॉड्यूल लेखको को भी शामिल किया जाकर कार्यक्रम बनता तो सामूहिक समझ बढती तथा प्रशिक्षण व्यवस्थित भी रहता।
- विद्याभवन के मुख्यदक्ष प्रशिक्षको को एक दिन मॉड्यूल लेखको के साथ बैठ कर समझ बनाने का अवसर दिया जाता तो उपयुक्त रहता। दूसरे शब्दो में राज्यस्तरीय दक्ष प्रशिक्षकों (मॉड्यूल लेखक) द्वारा 1–2 दिन का संभागियों के साथ जुडने वाले मुख्य दक्ष प्रशिक्षको अभिमुखीकरण रखा जाता तो समझ में स्पष्टता आती।
- यदि यह कार्यक्रम राज्य स्तर पर दो जगह रख लिया जाता तो सुविधापूर्ण होता ।
- प्रशिक्षण का समय कम से कम 7 दिवस का रखा जाना उपयुक्त है जिसमें कम से कम तीन दिन प्रशिक्षक तकनीक के मिले।
- चूंकि यह आवासीय प्रशिक्षण था अतः 1–2 घंटे रात्रि सत्र भी रखे जाते तो प्रशिक्षण माहौल बना रहता तथा 3 दिन के पूरे समय का उपयोग हो पाता।
- प्रशिक्षण तकनीक पर विषयवस्तु एवं समय दोनो ही कम रहे जो उनकी मूलभूत आवश्यकता थी अतः इसे गंभीरता से लिया जाना उचित रहेगा।

5.2 संदर्भ्य व्यक्ति प्रशिक्षण :– दक्ष प्रशिक्षक–प्रशिक्षण की निरन्तरता में ही संदर्भ्य व्यक्ति प्रशिक्षण रखे गये थें। इनमें एक– दो दिन का अवकाश स्थान पर पहुँचने के लिए होना चाहिए। इन प्रशिक्षणों मे हमारे विषय विशेषण टोंक जिले में जुडे।

क्र.स.	दिनांक	प्रशिक्षण स्थल	विषय विशेषज्ञ / सलाहकार
1.	21 मई 09 से 23 मई 09तक	के.जी.बी.वी.भवन टोंक	कमल किशोर
			नवल किशोर
2.	26 मई 09 से 27 मई 09तक	बी.आर.सी. भवन निंबाड़ा	नवल किशोर

इनका प्रतिवेदन परिशिष्ट 3 एवं 4 पर संलग्न है।

विषय–विशेषज्ञो की रिपोर्ट के अनुसार यहाँ उन्हें कार्य करने का अवसर मिला। चार बिंदुओ को विशेष रूप से स्पष्ट किया गया –

- विधा का चयन विषयवस्तु के अनुसार है या नहीं
- चरणों (विभिन्न कार्यचरण) की स्पष्ट समझ है या नहीं
- सत्र का प्रभावी प्रारंभ एवं समापन कैसे करें?

विषय विशेषज्ञो ने समय की आवश्यकता को देखते हुए इन पर चर्चा करना जरूरी समझा तथा जो संभागियो को अच्छी भी लगी। प्रायः सभी विषयो पर हमारे साथियो ने उपर्युक्त बिंदुओं को दृष्टिगत रखते हुए चर्चा की ।

5.3 <u>शिक्षक–प्रशिक्षण (ग्रीष्मकालीन)</u> – शिक्षक–प्रशिक्षणो में जाकर जिले के कोटपूतली, विराटनगर के कुछ केंद्रो पर सहयोग एवं संबलन हेतु समन्वयक डॉ. संतकुमार शार्मा जुडे।

क्र.स.	दिनांक	शिविर स्थल	संदर्भ व्यक्ति	विषय
1.	29.05.09	रा. सी.उ.मा.वि.प्रागपुरा (विराटनगर)	श्री जितेन्द्र यादव	गणित
			श्री सत्यदेव	विज्ञान
2.		विवेकानंद पब्लिक स्कूल नारेहडा(कोटपूतली)	श्री कैलाशचंद	टंग्रजी
			श्री उमरावप्रसाद	गणित

दोनों स्थानों पर संभागियो से चर्चा से करने पर कुछ तथ्य उभरकर सामने आये –

- प्रशिक्षण की अवधि कम है किंतु समय भी उपयुक्त नहीं है। इसे ग्रीष्मावकाश के प्रारंभ में या अंत में आयोजित करे जिससे हमारे काम भी हो सके ।
- यदि कार्य दिवसो में इनका आयोजन होता है, तथा बाहर आवासीय रखे जाते है तो सफलता ज्यादा मिलेगी।
- मॉड्यूल्स में वहीं बातें दोहराई जा रही है जो हम जानते है।

दो बिंदु तो हमारी सीमा से बाहर थे। तीसरे बिंदु पर खुलकर बात की गई तथा निष्कर्षतः सहमति बनी ।

- हम ही सब जानते है, इसे खाली करने पर सीखने की स्थिति बनेगी।
- आप जो जानते है, वह भी दूसरो के लिए सीखने के अवसर बन सकते है। सीखें और सिखायें की निरन्तरता में जीना है।
- प्रशिक्षण में विषयवस्तु से ज्यादा महत्व उस विधा का है जिसके द्वारा विषयवस्तु समझाई जाती है।
- मॉड्यूल लेखन में शिक्षकों (प्रा.स्तरीय) का जुडाव भी होना चाहिए। लिखते कोई हैं, सीखते कोई है। लिखने वाले और सीखने वाले दोनो का जुडाव इसमें होना चाहिए जिससे हमारी मूलभूत बाते जुड सके।

5.3.1 उपर्युक्त समझ के बाद सुझाव निम्नांकित है–

- प्रशिक्षण कार्यक्रम कार्ययोजना के प्रत्येक चरण से प्राथमिक शिक्षक की सहभागिता बनी रहनी आवश्यक है।
- विषवस्तु से ज्यादा विधा एवं प्रशिक्षण तकनीक की शिक्षक को जरुरत है।
- प्रशिक्षणो के लिए वातावरण निर्माण की आवश्यकता अधिक है न कि प्रशिक्षण देने की ।
- प्रशिक्षण से शिक्षक का लाभ होगा, इसकी समझ बनाने के कार्यक्रम भी तय किये जाने चाहिए ।
- प्रशिक्षण नाम भी शिक्षको पर भारी पडता जा रहा है। अतः सहज ग्राह्य स्वीकार्य नाम के साथ सिखाने को जोडा जाना चाहिए ।

6. **<u>समीक्षात्मक सारसंक्षेप</u>** – यूनीसेफ द्वारा वाणी संस्था को उपर्युक्त कार्य सौंपे जाने से लेकर प्रशिक्षण होने तक के कार्य पर समग्र दृष्टि डालने पर निम्नांकित स्थिति उंभरती है–

- यूनीसेफ द्वारा शिक्षको को सीखने के बेहतर अवसर देने की दिशा में कार्य प्रशंसनीय है।
- यूनीसेफ द्वारा संस्था का सौंपें गए दायित्व का प्रारंभिक मुख्य चरण उत्साह पद रहा ।
- जिस उत्साह से मॉड्यूल लेखन के चरण रहे तथा जिस आशा से प्रशिक्षण एवं शिक्षको को संबलन हेतु आधर भूमी बनाई गई उसका उपयोग हेतु कुशल निर्देश एवं अवसर का अभाव रहा।
- टी.ओ.टी. मॉड्यूल जो कार्ययोजना का मुख्य भाग था, लगभग अनछूआ ही रहा। उसके कुछ भाग को अनौपचारिक रुप से हमारे विषय विशेषज्ञो ने प्रशिक्षणो में प्रस्तुत किया जिसकी जरुरत संभागियो ने महसूस की ।
- कार्यशाला से लेकर मॉड्यूल लेखन में अनुभवी विषय–विशेषज्ञो का श्रम एवं यूनीसेफ के प्रशंसनीय योगदान हेतु हम आभारी है।

7. <u>नए संदर्भ में टी. ओ.टी.</u>

<u>प्रशिक्षक–प्रशिक्षण मार्गदर्शिका</u>

अनुभव से सीख : नई दिशाएँ

प्रशिक्षण का त्रिकोण – प्रशिक्षण से कैसे जुडे प्रभावी प्रशिक्षक कैसे बने?

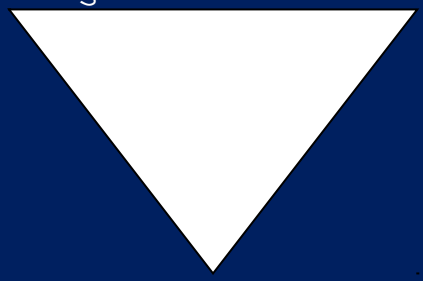

प्रशिक्षक स्वंय की मजबूती

इस त्रिकोण में प्रथम दो पर उपर्युक्त मार्गदर्शिका में यथास्थान चर्चाएं की जा चुकी है। तीसरा मूल बिन्दु (आधार बिन्दु) स्वयं की मजबूती का है जिस पर भी विचार किया जाता उतना ही आवश्यक है।

मुख्य दक्षप्रशिक्षक/दक्षप्रशिक्षक/ प्रशिक्षक सभी की मुख्य भूमिका शिक्षक एवं बालक के लिए है। बालक से शिक्षक से शिक्षक सहजभाव से कैसे जुडे एवं इस करणीय में हमारे दक्षप्रशिक्षक कितनी प्रभावी भूमिका निभा सकते है । इस चिंतन के साथ व्यावहारिक कार्य करने का प्रश्न है। प्रत्येक स्तर पर बालक को सामने रखकर ही सीखना–सीखाना होगा।

अतः प्रशिक्षक की अपनी मजबूती के लिए निम्नांकित बिन्दु उसे स्पष्ट होने चाहिए तथा इन पर व्यावहारिक चर्चा हेतु तैयार रहना चाहिए –

- समुदाय /स्कूल /बालक से जुडाव–शिक्षक के लिए –
  - संवेदनशीलता
  - सुख दुख में भागीदारी
  - धैर्य (सुनने में एवं निर्णय लेने में)
  - स्नेहिल व्यवहार (मुस्कान के साथ)
- प्रभावी संप्रेषण ।
- शैक्षिक नवचारों की समझ।
- सीखने की प्रभावी इच्छा –
  - स्वाध्याय
  - शैणिक संवाद
  - नवाचारी प्रयोग
  - सिखाते हुए सीखने की ललक
  - परिस्थिति युक्त वातावरण से सीखने की इच्छा

उपर्युक्त हेतु कुछ संदर्भ सामग्री भी निर्मित कर उन तक पहुँचानी होगी जिससे सीखने का सहज वातावरण बन सके।

इस सीखने–सिखाने की परिस्थिति को निम्नांकित त्रिकोणो में दर्शनीय बनाकर शिक्षक एवं प्रशिक्षक की भूमिका को देखा गया है, वस्तुस्थिति तो यह है कि एक प्रशिक्षक पहले शिक्षक है, अतः उसे अपनी भूमिका वही से जोडकर देखनी हेगी।

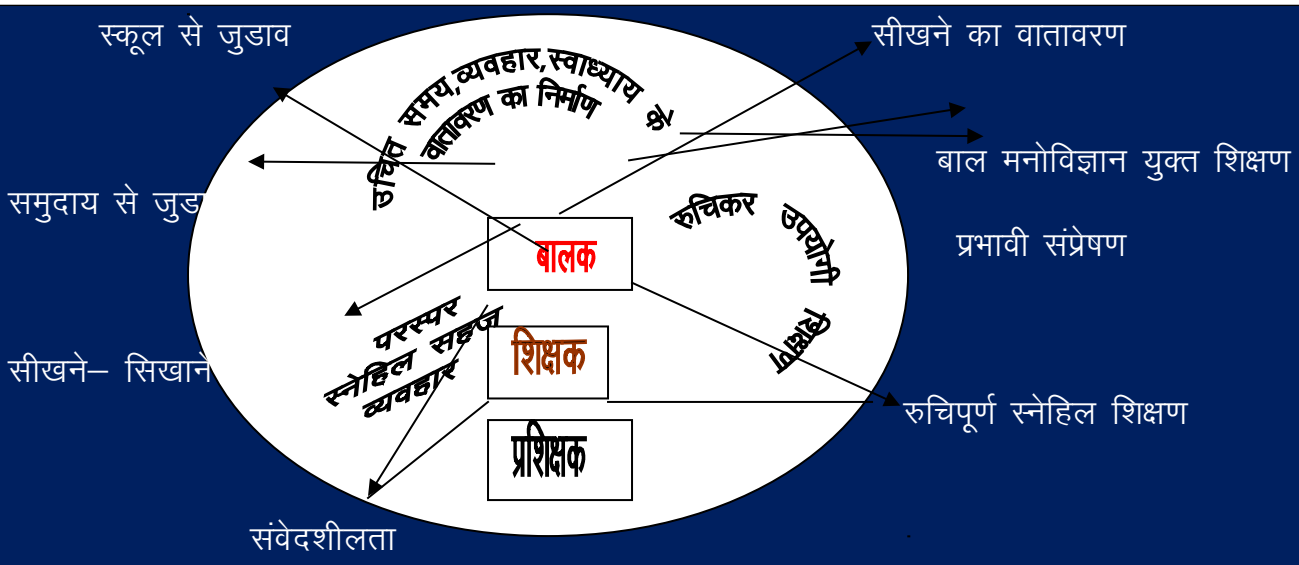

अनेक त्रिकोणों से युक्त यह स्थिति जितनी सहज एवं व्यावहारिक होगी उतनी सीखने–सिखाने की स्थिति सुखद बनेगी। प्रशिक्षक को अपने प्रशिक्षणीय आचरण में इसे अपनाकर शिक्षक के लिए सहज बनाना चाहिए। बिना आचरण के कथन अप्रभावी होता है अतः स्वाचरण में ढालकर ही सिखने की स्थिति सहज एवं सुखद बन सकती है । इस त्रिकोण को और भी सरल और बोधगम्य बनाया जा सकता है । यह पूर्ण नहीं है, इसको पूर्णता तब मिलेगी जब आपके लिए यह सहज बन सकेगा। इस सहज ग्राह्यता में जहाँ अडचने हो उसे दूर किया जाना नितान्त आवश्यक है। अतः इसे व्यावहारिक बनाने, सहज बनाने, बेहतर बनाने एवं उपयोगी बनाने की दिशा में समवेत श्रम की जरुरत है, जो समय–समय पर नूतन आयाम दे सके तथा स्वच्छ, सुगंधित वायु हेतु वातायन खेल सके जो हमारी मानसिक थकान दूर करती है ।

<u>टी.ओ.टी. हेतु सुझाव–</u>

प्रशिक्षको के सुझाव तो प्रशिक्षको के साथ ही जोड दिये है किंतु टी.ओ.टी. मॉड्यूल लेखन में जो श्रम हुआ है उसे प्रशिक्षको हेतु उपयोगी बनाने की दृष्टि से यूनीसेफ स्तर पर प्रकाशित करवाया जाना प्रस्तावित है। प्रकाशन से पूर्व इसमें वर्तमान प्रशिक्षण के अनुभव एवं सामान्य मॉड्यूल के (पूर्व में प्रकाशित) महत्वपूर्ण अंशो को जोडा जाने है तीन– चार दिन पुनः प्रभावी प्रकाशन हेतु बैठना भी प्रस्तावित है। यदि यह कार्य वाणी संस्था को सौंपा जाता है तो हमें कार्य को करने में खुशी भी होगी तथा हम अपने श्रम का सार्थक उपयोग भी समझेंगे।

इस दृष्टि से संस्था के विषय – विशेषज्ञों से विचार मंथन भी चल रहा है । प्रशिक्षक प्रशिक्षण तकनीक एवं संदर्भ सामग्री दोनो पर पर ही पुनः सोचा जा रहा है तथा आवश्यक संबलन भी किया जा रहा है।

वाणी संस्था के विषय – विशेषज्ञ /सलाहकार

श्री ललितकिशोर लोहिनी	शिक्षाविद्	`सेवानिवृत वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी, हिन्दी
श्री हरेन्द्रनारायण गुप्ता	शिक्षाविद्	सेवानिवृम रीडर ट्रेनिंग कॉलेज, अजमेर
डॉ.संतकुमार शर्मा	शिक्षाविद्	पूर्व सहायक निदेशक शिक्षाकर्मी बोर्ड
श्री अनिल गुप्ता	शिक्षाविद्	विषयविशेषज्ञ संधन, जयपुर
श्री ललित किशोर लोहिमी		सेवानिवृत शिक्षाविद् एवं शिक्षा अधिकारी
श्री एच.एन.गुप्ता		सेवानिवृत रीडर ट्रेनिंग कॉलेज अजमेर
श्री अनिल कुमार गुप्ता		संधान विषय विशेषज्ञ गणित
श्री नीतू शार्मा		विषय विशेषज्ञ हिन्दी
श्री दीनदयाल शर्मा		विषय विशेषज्ञ सा. विज्ञान
श्री नवलकिशोर		विषय विशेषज्ञ गणित
श्री जगतराज		विषय विशेषज्ञ हिन्दी
श्री नटवरलाल		विषय विशेषज्ञ हिन्दी
श्री गिरिजा शर्मा		विषय विशेषज्ञ विज्ञान
श्रीमती रिया गुप्ता		विषय विशेषज्ञ सा. विज्ञान
श्री कमलेश गुप्ता		विषय विशेषज्ञ गणित
श्री कमलकिशोर शर्मा		विषय विशेषज्ञ विज्ञान
श्री सुभाष मुगल		विषय विशेषज्ञ अंग्रजी, हिन्दी